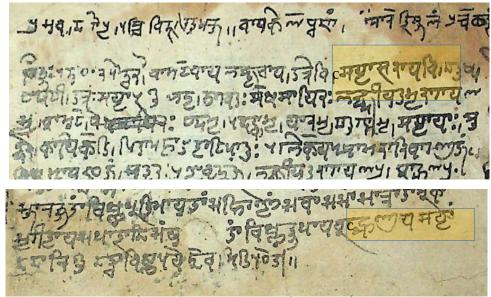
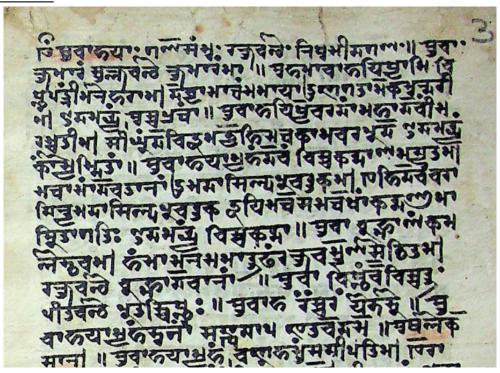
## **Manuscript 22**

## Title- Shayya Dana Vidhi- Avahana Mantra

## Shayya Dana Vidhi



## Avahana Mantra



अभवाद नेथा शिक्षा क्षा है असी विष्ण के निया है निया है निया है के अचिका न्पेमी उत् मरू १ जहारावाः मेधमाधाः नद्वी व उर्हाण्या भविर्गान महार मही कि रिक्त मिक्स सिक्द्र र द्वार मिक्ट्र मिक्ट्र र द्वार मिक्ट्र मिक्ट्र र द् भावः सिविधित्र प्रकृति प्रमान निवार द्वार कार्य उमेध्या सिने लक्की खंडर यन रण्य ए य दर्भण्य श्रीर्भं व सुन री न माहिष्णम् छेनेथाउकुल्नसचुङं भनुष्ण्यितिभेषु इंग्डन् न्द्रभ्रतिके कि भगत्रन्ति धरेष्ट्रपासन् प्रक्रायन् भेयु उपम मिन्नियनपर्हिरानथार्थकथार्म सिन्धियस्थारापरकि र्वे क्सचुर्क्न व्युवन्त्न मिन्न नामिन भागानि भन्त नीपक्रि भयुर्ग्याक्षेत्र विज्ञानिक के कड़ श्राहित्र तमे युरंभव प्रव मान्या विश्व परिभाष्य स्थिति हो अवि असं भामा प्राप्त से अस्यमध्याक के विद्युप्प कि प्रमिष्ट इस्मिन महाविद्यप्रे हिन् भेडिन्ना

भष्टकलम् ३िष्ठैः।। यमब्यु म् वन्भारिः धिष्वी भरिक्ष किरिम्भीधारिक भिजनः सन् । अनी मिभी रिकीसभने की बकल इस्माय "मुयंद्रेः वित्रभ कारोज्यमिक सम्मा क्रिक न प्रमान कारोजिक कारोजित कारोजित कारोजित कारोजित कारोजित कारोजित कारोजित कारोजि अग्राप्ट मस्यो। भट्टे मिष्ठम्, मुन्हेत्, यभेराजाः, भणा उद्भागमानुभीके गल्यायाम प्रकृष्ट नाबा मध्य दूरमा चिन वर भूम ३ थाषिरे = इस्व - अद्या वं भाषा वा वा अभिरायभन्नाया भिष्टि = इन्य दः। अस्ति। विषय प्रति । भी विष्य रहा भीने के यामा भना निवा ेला है। कलमें उस्टिम्न विन्द्रम् । या विद्यान विक्रम् भज्ञाभड़ रेलेक्डीमार्डिंडिता

ि स्वार्याः गल्मंशः गज्येतः निध्भीमगलः॥ प्रवः ज्ञानं स्मार्वते ज्ञानंभाः ॥ प्रद्रावः विद्याम वि स्वार्थाभेनेद्रामा मृद्यामानंभाया । प्रद्रावः महभूत्रेती भा द्रम्थे । प्रदेश विद्युत्वरमं भद्धां मही। र्थियोग मी भूमविङ्गाङ्गित्र विष्ठ मान्य प्रमेन्द्र क्रिया विष्ठ मान्य प्रमेन्द्र भवन्भेग्मवुउण्ने इभम्भान्य भवा के भी एकिम्बेवरा मिनुभमामिला भनुतुक इधिभन्म भन्धिक मण्णभा निक्ति क्षेत्रकार्य । प्रति विद्या । प्रति । वनभभग्रहें अच्छा मिम् अक्षायं भीडरहें प्रमु थचउ।। पुराक, र इति म्या मिन्न कर्ड इति । यम्ययंग्रिमिथ्रण्या रच्यतं ,मध्मिशियंग् । चुवाद्, गद्मगर्गभद्भावनं निकिथाभनभाषुद्धम पुल्में ह्यानक्भा व्युवलंभक्षा क्षा मङ्भित्रभा विनिध् यभगणाय्। चवाक निर्दे र्रेड्थिकाउभा प्यञ्चभार्भभेत्र ग्रंमभ्यभाष्ट्रभ् मठवडा नीलवन्व नीलभ्रा विल युर्चम्बी युक्त त्रकृष्यामम् थाउमा भूगमत्यु उउद्ये चिक्किक्रांभकाभनं नीलवेल उच्छमं। मु व्यक्षायक्ष्मणागिलभा क्रिक्णभनभाष् क्रिक्त भः भ्रम्किन्भा र वर्तेल राखवायानी । वर्षा वर्ष न्स्रवामः अमिहिडमा न्स्रवंन्त् मिभाई॥

मुवाद रंगानंग इरंगियम्। मुद्र हरंगियं मुभूनील क्षेत्रहम्भा मुक्कावल, रंगामान्यः॥ मुवादः इक्षाणक्रमेल्युः क्षेत्राम्यम्भागे द्वा व्यक्तिः माठ्यभा ग्रावेल, यक्ष्मण्यां। मुवा व्यक्तिः विस्तु भिण्या वास्त्रह्मी क्षेत्रभागायं भस्त्रम् नुभा माउच्डाम् एस के कमवेण मुक्त वर्णभा थीउ भूग विद्यान भाना विद्य धिउभी विनि वसर्विष्ठ्र॥ वयनागः॥ / व्याक्याभक मृष्ट्रामज्ञालनायक्श मन्द्रमधनाग्रस्य अकिंउमकें उधा धर्ममव्भक्ष्यम्मक्षेक्ष् मक्षथरनक्भा एउनणाः भ्रथ्याच सर्वा मैंच की बिड विलं पन्नागिः॥ प्रवाक नभवज्ञद्भक्रणभन्धचमः चुवाकिउ पूर्व चेर्ड प्रायुक्त ।। सम्बद्ध मुक्क रुन्भ, रज्ञव मुक्क्षन ॥ मुक्क, मनुने मुक्तव ,याज्याभानि॥ चुवार्क ,लेकिउग्दूर्भ की भाग भक्र प्रस्पर्भमयम् अल्य महर्य द्धार्भा गडार मध्यम्। प्रवर्ग राशिष्ठ विवन्न भी भी पक्रमें भवमा भारा विम रीरक्भा पीउन्त नेगिभेम ॥ अना र क्रिश र्शिक्षा भी प्रचल थक भार । मुक्रिक क्रानचेम् द्रभाषाउभा मुस्राण पुन्मित्य कण्णभिधिक्षित्रभी मुल्लाचल मुज्ञण्हित

श्री:

4

खुवार अद्युर्भिक्षान्तमा नमक्ष्रिवित् लार्ड इउभक्षिक्यभक्षान्तमा मुक्क महिम्बी खुवार मिक्रिक्यभकारलमा मुक्क महिम्बी विकिस्भवमेवप्रकृत्वक्भ क्रिक्निक्रिक क्याना ॥ पुरा कड़िभच गुरु पुरु मी नील क्ली अउस क्षमं भा इ ए छ पेरा मुभभी अभ वेले कछुँ ॥ मुवा प्रवाग्याभेकावल भा एथी छे अवर में हैं में के ममवाभन भा यक्तमज्ञ अउनिद्धमा ग्रंभिम् यंग्रे, भीउवन्ते । प्रवाक्ते ॥ चुवा, मार्थ म्यभविडम नस्रुपारनिङ्गपर्पे च्चम मिक्छेब्रक्लभणन्यक्णानिय उंग्वं एकम्इ (प्रान्डमिण्धाप्रे रायें भीउवने ॥ मार्थः ॥ मुक्त म्डियानीभक्षा अस्म जिसकीए भड़ान वभन्भचमिकनाभा गालक्ष उवनक उ यक्ष उधिमामकभा गालगा विभवास लिक्याना सुधराया । तिभिष् मित्र ॥ थक्तुंभमकनंभाः॥ म्पाउः॥

चुवाक्रयामवी मारिकाथ मा अवने भी ,कारिका भचिभारीना भीरा क्रिमें के निक्त देश भेड़िया चुवा वाभमवंभळस्मा हिल्मनंग चुमुई नम्बर्भमामथ्रम्। दुमभेक ॥ प्रवण्याम क्रमवीर क्षीरका रूपिनीभी इउइर विम् भुंभिक्षभनवाभुडिभा दुमभुक्रम ॥ चुबाक इउमंद्रुडभविडभ इउद्देडिक्र इडिभिडं इडिभ मंभाप , इम्भवं ॥ मुक्त्यर्थकं मर्वी इला थचउराभनीमा खुलाशापीभक्राविधनामि नीभचकाभमा भिकाभनिधुउंनिडंभचम्इ निअमिनीभी डिमुलमहार्मेज्र भिएएरिलीचे रभंधरी रज्ञवनी। युवा भक्तर्मवंभक्तरण भूभा भक्ताचाधिकुंकन्त् भूदक्षिण्यक्विकुभा भेलिए लग्भमनुग्र भेजिए नियनि शिकिः भक् धिउंचाभगयाभे छारू धिउवियूक्म दम्भर्ड चुवाक्रयाश्रक्तमंत्री मुठमाभठयाद्वरीमा इस दूरीभउयाद्वामङ्ग ण मठयाद्वरीमा उन्न तेले यउए म्ह.॥ भागनाभुगनिङ्गाथरभानचाकारिणीमा इक् विश्वभिक्तमान्यू शिलीभचकाभमाश मिझ्के म्किंपरभेग्म हिन्।संड्रियली परम्हरव कंप्र क्रांविष्ठनानक्षिण्काभी भम्मिर्थमानुः भू परभाभाउमाधनीभा माजि इंग्एंपरा भिहिंचे ी भिन्नित्थवभाष्ट्रमाभी दुर्म । शि वित्र विदः ॥

मी.